जब–जब कहा गया उनसे

जब–जब कहा गया उनसे–
ठीक नहीं भई, बिन सोचे–समझे
खेती को खाते जाना,
शहरी अंधानुकरण में
कंकरीट के जंगलों को बढ़ाते जाना,
सीढ़ियों को तरसती सीढ़ीनुमा इमारतें
खड़ी करते जाना,
कृत्रिम घास और पौधों से
प्रकृति का श्रृंगार करते जाना,
मजदूर के पसीने की कमाई से
तिजौरियां भरते जाना,
और जमीन छीन गांवों को
पंगु बनाते जाना।
उनकी कड़ी प्रतिक्रिया–
तुम विकास विरोधी हो!
जब–जब कहा गया उनसे–
फैशन के नाम पर जिस्म की नुमाईश
बिल्कुल उचित नहीं,
स्त्री विमर्श के नाम पर
नारी को कमतरी का एहसास
दिलाते रहना बड़ा गुनाह है,
आधुनिक होने का झांसा दे
उसके तन, मन और विचारों से खेलना
सीधी–सीधी ठगी है।
तो पता है क्या बोले?
तुम स्त्री गुलामी के प्रतीक हो!
जब–जब कहा गया उनसे–
भई, सेक्स पढ़ाने की चीज नहीं,
मंदिर–मस्जिद लड़ने की जगह नहीं,
संसद कोई अखाड़ा नहीं,
जनता का पैसा निजी खजाना नहीं।
उनकी एक सुर में दहाड़–
तुम लोकतंत्र के दुश्मन!
जब–जब कहा गया उनसे–
सच छुपाने की चीज नहीं

जमाना होशियार!
पैसे वाले कंगाल कहलाओगे
विकल्प हजार!
तुम मां, बेटी, बहन और बीवी
के लिए तरस जाओगे
हमें है खुद से प्यार!
तुम पुनः गुलाम बन जाओगे
हम हैं बेकरार!
दरबार उजड़ चुका था
बाबा ने चिलम सुलगाई और
उड़ा दिया धुआं–
शायद कल इतना सुनने को भी न हो कोई तैयार!

–तसलीम

———————————————————